

अडीके डे बारे में सुवाल जवाब

सैबे तरीकत अमीरे अहले सुन्नत अजू सिलकत हजरत अलवामा मौवाना
मुहम्मद एल्यास अतार डाहिरी रअवी



सिखल नम्बर : 57

ये अडीके मरने वाता भस्सा शफायात
करलोगा या नहीं ?
भरे हुये भस्से का अडीका ?
भस्से के नामों के बारेमें म-दनी कूस
जानवर की छिन्न में शक ले तो ?
डाहिरी दाई से प्रयत्नी करवाना हराम है
अडीके की दुआ

पेशकश : मजलिसे म-दनी मुआकरा

सिलेक्टेड हाईस, अलिङ्ग की गरिब से सामने, दीन दरवाजा, काइमदल्लाह-1 मुबलत, अरिब
Ph:91-79- 25391168 E-mail: maktabahInd@gmail.com
www.dawateislami.net



الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
 أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अकीके के बारे में सुवाल जवाब

शैतान लाभ सुस्ती दिलाओ सिर्फ 32 स-इलात पर मुश्तमिल येह रिसाला मुकम्मल पढ लीजिये

إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ मा'लूमात का अनमोल भजाना हाथ आयेगा.

दुइए शरीफ की इमीलत

उठरते सय्यिदुना अबू ददार् صلى الله تعالى عنه से रिवायत है के शईउल मुज्जिनीन रडमतुल्लिल आलमीन صلى الله تعالى عليه وآله وسلم का ईशादि दिलनशीन है : जिस ने मुज पर सुबु व शाम दस मरतबा दुइए पाक पढा वोह क्रियामत के दिन मेरी शफ़ाअत को पायेगा.

(मजमउज्जवाईद, जिल्द:10, स-इला:163, उदीस:17022)

صَلُّوا عَلَى الْكَئِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

अकीके की मा'ना

सुवाल 1 अकीके के क्या मा'ना हैं ?

जवाब: अकीके का लफ़्ज़ी मा'ना : “अकीका बना है अक्क से ज मा'ना काटना, अलग करना.”

(मिअतुल मनाज्जिद, जिल्द:6, स-इला:2, जियाउल कुरआन पब्लिकेशन्स, मर्कजुल औलिया लाहौर) अकीके के शर-ई मा'ना: बर्या पैदा होने के शुक्रिया में जो जानवर जभु किया जाता है उस को अकीका केहते हैं.

(बहारे शरीअत, डिस्सा:15, स-इला:153, मक्तबअे र-जविय्या, बाबुल मदीना करायी)

सुवाल 2 अकीका करने में क्या क्या अख़ी नियतें करनी याहियें ?

जवाब: बर्या/बर्यी की विलादत की मुसरत पर बतौरै शुके ने'मत, अदाओ सुन्नत के लिये अल्लाह रब्बुल इज्जत की रिजा की भातिर अकीके की सआदत हासिल करता हूं. ईस के ईलावा भी हस्बे हाल नियतें की जा सकती हैं. याद रहे ! बिगैर अख़ी नियत के अमले भैर का सवाब नहीं मिलता. जाहिर येही है के अकीका करते वक्त करने वाले के दिल में नियते अकीका होती होगी ताहम जितनी अख़ी अख़ी नियतें जियादा उतना सवाब भी जियादा. उदीसे मुबारक में है : “मुसल्मान की नियत उस के अमल से बेहतर है.”

(अल मु'जमुल कबीर, जिल्द:6, स-इला:185, उदीस:5942, दारे अेह्याउतुरासिल अरबी, बैरत)

क्या अकीका न करना गुनाह है ?

सुवाल 3 क्या अकीका न करनेवाला गुनहगार होता है ?

जवाब: नहीं. अकीका करना इर्ज या वाजिब नहीं मुस्तहब है और मुस्तहब तर्क करना गुनाह नहीं.

बे अकीका मरने वाला बर्या शफ़ाअत करेगा या नहीं ?

सुवाल 4 क्या येह दुरुस्त है के जो बर्या बिगैर अकीके इन्तिकाल कर गया वोह अपने वालिदैन की शफ़ाअत नहीं करेगा ?

जवाब: जो हां, मगर ईस की सूरतें हैं: जिस बर्ये ने अकीके का वक्त पाया या'नी वोह बर्या सात दिन का हो गया और बिला उजूर जब के इस्तितआत (या'नी ताकत) भी हो उस का अकीका न किया गया तो वोह अपने मां बाप की शफ़ाअत न करेगा. उदीसे पाक में है के الْعَلَامُ مُرْتَهَنٌ بِعَقِيْبَتِهِ या'नी “लडका अपने अकीके में गिरवी

है.” (सुननुत्तिरमिजी, जिल्द:3, स-इंछा:177, उदीस:1527, दारुल इक बैरत) अशिअतुल्लम्मात में है : एमाम अहमद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى فرमाते हैं : “बय्ये का जब तक अकीका न किया जाये उस को वालिदैन के हक में शफ़ाअत करने से रोक दिया जाता है. (अशिअतुल्लम्मात, जिल्द:3, स-इंछा:512, कोईटा) सदरुशशरीआ, बद्रुत्तारीका हजरते अल्लामा मौलाना मुहत्ती मुहम्मद अमजद अली आ'जमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى मज़कूर उदीसे पाक के तहत फ़रमाते हैं : गिरवी होने का येह मतलब है के एस (लउके) से पूरा नइअ हासिल न होगा जब तक अकीका न किया जाये और बा'ज ने कहा, बय्ये की सलामती और उस की नश्वो नुमा और उस में अख़े अवसाफ़ (भूबियां) होना अकीके के साथ वाबस्ता है.

(बहारे शरीअत, डिस्सा:15, स-इंछा:152, मक्तबअे र-जविया, बाबुल मदीना करायी)

कय्या हम्ब गिर जाने की इमीलत

सुवाल 5 कय्या हम्ब गिर जाने की सूरत में अकीका करना होगा ?

जवाब: नहीं. कय्या हम्ब गिर जाने के सबब उमूमन मां बाप बहोत परेशान हो जाते हैं. उन की तसल्ली के लिये अर्ज है के जैसे मौकअ पर सब्र कर के अज कमाना याहिये. कय्या हम्ब गिर जाने में मां बाप का बहोत बडा बहोत ही बडा फ़ाईदा है युनान्ये, उदीसे पाक में है के अल्लाह के हबीब, हबीबे लबीब عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने ईशाद फ़रमाया: “बेशक कय्या बय्या (या'नी शिकमे मादर से ना मुकम्मल गिर जाने वाला) अपने रब عَزَّوَجَلَّ से (उस वक्त) उगडेगा, जब के उस के वालिदैन (जिन का ईमान पर ખातिमा हुवा होगा मगर शामते आ'माल के सबब उन) को अल्लाह तआला दोज़भ में दाखिल फ़रमायेगा, हुकम होगा: ऐ अपने रब عَزَّوَجَلَّ से उगडने वाले बय्ये ! अपने मां बाप को जन्नत में ले जा, लिहाजा वोह अपने नाल से दोनों को खीयेगा. यहां तक के उन्हें जन्नत में ले जायेगा.

(सुनने एब्ने माज, जिल्द:2, स-इंछा:273, उदीस:1608, दारुल मा'रेफ़ा, बैरत)

मीठे मीठे ईस्लामी भाईयो ! इस रिवायत से ईमान की सलामती की अहम्मियत भी उजागर हुई के शफ़ाअत की ने'मत पाने के लिये ईमान का सलामत होना लाज़िमी है लिहाजा हर अेक को अपने ईमान की सलामती की इक करनी याहिये. यकीनन ईमान की सलामती अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिजा में पोशीदा है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिजा उस की और उस के हबीब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की फ़रमांवरदारी में है और ईमान की बरबादी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नाराज़गी में पोशीदा है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नाराज़गी उस की और उस के हबीब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ना फ़रमानी में है. अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें ईमान की सलामती अता फ़रमा दे.

امين بجاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

मरे हुये बय्ये का अकीका ?

सुवाल 6 अगर बय्या पैदा होने के बा'द सात दिन से पडले पडले इत हो जाये तो उस के अकीके का क्या करें ? अगर मरने के बा'द कर दें तो वालिदैन की शफ़ाअत करेगा या नहीं ?

जवाब: अब अकीके की हाजत नहीं ऐसा बय्या शफ़ाअत कर सकेगा. मेरे आका आ'ला हजरत,

ઈમામે અહલે સુન્નત, મૌલાના શાહ ઈમામ અહમદ રઝા ખાન عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰنِ ફરમાતે હૈં : જો મર જાએ કિસી ઉમ્મ કા હો ઉસ કા **અકીકા** નહીં હો સકતા, બચ્યા અગર સાતવેં દિન સે પહલે હી મર ગયા તો ઉસ કે **અકીકા** ન કરને સે કોઈ અસર ઉસ કી શફાઅત વગૈરા પર નહીં કે વોહ વક્તે **અકીકા** આને સે પહલે હી ગુઝર ગયા, **અકીકે** કા વક્ત શરીઅત મેં સાતવાં દિન હૈ. જો બચ્યા કબલે બુલૂગ મર ગયા ઓર ઉસ કા **અકીકા** કર દિયા થા, યા **અકીકે** કી ઈસ્તિતાઅત (તાકત) ન થી યા સાતવેં દિન સે પહલે મર ગયા, ઈન સબ સૂરતોં મેં વોહ માં બાપ કી **શફાઅત** કરેગા જબ કે યેહ (યા'ની માં બાપ) દુન્યા સે બા ઈમાન ગએ હોં.

(ફતાવા ર-ઝવિયા (તખીજ શુદા), જિલ્દ:20, સ-ફહા:596, 597)

સુવાલ 7 અગર કિસી ને સાતવેં દિન સે કબલ હી બચ્યે કા અકીકા કર દિયા તો ?

જવાબ: અગર્યે અકીકે કા વક્ત સાતવેં રોઝ સે શુરૂઅ હોતા હૈ ઓર સુન્નત વ અફઝલ યેહી હૈ તાહમ ઈસ સે કબલ હતા કે એક દિન કે બચ્યે કા ભી અકીકા કર દિયા તો હો ગયા.

બચ્યે કે કાન મેં કિતની બાર અઝાન દેં ?

સુવાલ 8 બરાએ કરમ ! યેહ ભી બતા દીજિયે કે બચ્યે યા બચ્યી પૈદા હો તો ઉસ કે કાન મેં **અઝાન** કબ ઓર કિતની બાર દેં, બચ્યે કા **નામ** કૌન સે દિન રખેં ઓર સર કે બાલ કિસ દિન સાફ કરવાએં ?

જવાબ: જબ બચ્યા પૈદા હો તો મુસ્તહબ યેહ હૈ કે ઉસ કે કાન મેં અઝાન વ ઈકામત કહી જાએ અઝાન કેહને સે **ان شاء الله عزوجل** **બલાએં દૂર હો જાએંગી.** હઝરતે સય્યિદુના ઈમામ હુસૈન ઈબને અલી **رضي الله تعالى عنهم** સે મરફૂઅન મરવી હૈ કે જિસ બચ્યે કે દાહને કાન મેં અઝાન ઓર બાએં કાન મેં તકબીર કહી જાએ તો ઉસે **ان شاء الله عزوجل** ઉમ્મુસ્સિબયાન (બચ્યોં કી મિરગી જિસ મેં બચ્યા સૂખતા જાતા હૈ) નહીં હોગી.

(શુઅબુલ ઈમાન, જિલ્દ:6, સ-ફહા:390, હદીસ:8619, દારુલ કુતુબુલ ઈલ્મિયા, બૈરૂત)

બેહતર યેહ હૈ કે દહને (યા'ની સીધે) કાન મેં ચાર મરતબા **અઝાન** ઓર બાએં (યા'ની ઉલ્ટે) કાન મેં ત્રીન મરતબા **ઈકામત** કહી જાએ. સાતવેં દિન ઉસ કા નામ રખા જાએ ઓર ઉસ કા સર મૂંડા જાએ ઓર સર મૂંડને કે વક્ત **અકીકા** કિયા જાએ ઓર બાલોં કો વઝૂન કર કે ઉતની ચાંદી યા સોના **સ-દકા** કિયા જાએ.

(બહારે શરીઅત, હિસ્સા:15, સ-ફહા:153)

જલ્દી નામ રખના કેસા ?

સુવાલ 9 આપ ને અભી બતાયા કે સાતવેં દિન નામ રખા જાએ તો અગર કિસી ને પહલે યા દૂસરે દિન ભી નામ રખ લિયા તો ?

જવાબ: કોઈ હ-રજ નહીં.

બચ્યે કે સર પર ઝા'ફરાન મલિયે

સુવાલ 10 **અકીકે** મેં બચ્યે કા સર મૂંડને કે બા'દ સુના હૈ સર પર ઝા'ફરાન મલના ચાહિયે.

જવાબ: આપ ને દુરુસ્ત સુના હૈ. હઝરતે સય્યિદુના બુરીદા **رضي الله تعالى عنه** સે રિવાયત હૈ, ઝમાનએ જાહિલિય્યત મેંજબ હમ મેં કિસી કે યહાં બચ્યા પૈદા હોતા તો વોહ બકરી ઝબ્હ કરતા ઓર ઉસ કા ખૂન બચ્યે કે સર પર લિથડ દેતા ફિર જબ **ઈસ્લામ** કા ઝમાના આયા તો

हम बकरी जल्द करते थे और बय्ये का सर मुंडाते और सर पर **ज'इरान** लगाते.

(सुनने अभी दावूद, जिल्द:3, स-इला:144, उदीस:2843, दारे अइयाउत्तुरासिल अरबी, बैरत)

हर उम्र में सातवां दिन निकालने का तरीका

सुवाल 11 अगर सातवें दिन **अकीका** न कर सकें तो क्या हुकूम है ?

जवाब: कोई गुनाह नहीं. मेरे आका आ'ला उजरत, एमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह एमाम अहमद रजा भान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ** इरमाते हैं: **अकीका** विलादत के सातवें रोज सुन्नत है और येही अइजल है, वरना **यौदहवें दिन**, वरना **ईक्कीसवें दिन**. (इतावा र-जविया, जिल्द:20, स-इला:586) **सद्रुशरीआ बद्रुत्तरीका** उजरते अल्लामा मौलाना मुफ्ती मुहम्मद अमजद अली आ'जमी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَوَى** इरमाते हैं: अकीके के लिये **सातवां** दिन बेहतर है और अगर सातवें दिन न कर सकें तो जब याहें कर सकते हैं, **सुन्नत** अदा हो जायेगी. बा'ज ने येह कड़ा के **सातवें** या **यौदहवें** या **ईक्कीसवें** दिन या'नी सात दिन का लिहाज रखा जाये येह बेहतर है और याद न रहे तो येह करे के जिस दिन ब्या पैदा हो उस दिन को याद रखें इस से अक दिन पहले वाला दिन जब आये तो वोह **सातवां** होगा, म-सलन जुमुआ को पैदा हुवा तो जुमा'रात सातवां दिन है और सनीयर (या'नी उइते) को पैदा हुवा तो सातवां दिन जुमुआ होगा पहली सूरत में जिस जुमा'रात को और दूसरी सूरत में जिस जुमुआ को अकीका करेगा इस में सातवें दिन का हिसाब जरूर आयेगा.

(बदारे शरीअत, हिस्सा:15, स-इला:154, मक्तबअे र-जविया, बाबुल मदीना कराची)

शादी के जानवर में अकीके की नियत करना कैसा ?

सुवाल 12 शादी के जानवर में बा'ज लोग दूल्हा और दीगर अइराद के **अकीके** की नियत कर लेते हैं. क्या इस तरह **अकीका** हो जाता है ?

जवाब: अगर जानवर कुरबानी की शराहत के मुताबिक हो और कोई मानेअे शर-ई न हो तो **अकीका** हो जायेगा.

गाय में कितने अकीके हो सकते हैं ?

सुवाल 13 गाय में कितने **अकीके** हो सकते हैं ?

जवाब: इस मुआमले में इस के मसाएल कुरबानी की तरह हैं लिहाजा गाय में सात हिस्से हैं और यूं सात अकीके भी हो सकते हैं.

कुरबानी के जानवर में अकीके का हिस्सा

सुवाल 14 क्या कुरबानी की गाय में भी अकीके का हिस्सा डाल सकते हैं ?

जवाब: ज़ हां.

बय्यों के नामों के बारे में म-दनी झूल

सुवाल 15 बय्ये का नाम रखने के बारे में कोई म-दनी झूल एनायत इरमा दीजिये.

जवाब: सद्रुशरीआ बद्रुत्तरीका उजरते अल्लामा मौलाना मुफ्ती मुहम्मद अमजद अली आ'जमी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَوَى** इरमाते हैं: बय्ये का अय्यण नाम रखा जाये. हिन्दोस्तान में बडोत लोगों के ऐसे नाम हैं जिन के कुछ मा'ना नहीं या उन के बुरे मा'ना हैं, ऐसे नामों से अहतिराज (या'नी परहेज) करें. अम्बियाअे किराम **عَلَيْهِمُ السَّلَامُ وَالسَّلَام** के अस्माअे तय्यिबा और सलाबा व ताबिईन व बुरुगाने दीन **رَضْوَانُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ** के नाम पर नाम रखना बेहतर है. उम्मीद है के एन की ब-र-कत बय्ये के शामिले डाल हो. (बदारे शरीअत, हिस्सा:15, स-इला:154) उम्मुल

मुअ्मिनीन हजरते सय्यिदतुना आ'श सिदीका صلى الله تعالى عليه से रिवायत है के नाबिये रहमत, शफीअे उम्मत, शहन्शाहे नुबुव्वत, ताजदारे रिसालत صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ने इरमाया: अर्रों के नाम पर नाम रफो और **अपनी हाजते अर्रे येहरे वालों से तलब करो.**

(अल इरदौस बिमा नूरुल किताब, जिहद:2, स-इहा:58, अल हदीस:2329, दारुल कुतुबुल इल्मिया, बैरुत)

मीठे मीठे इस्लामी भाईयो ! हदीसे पाक में “अर्रे येहरो वालों” से हाजते तलब करने की तरगीब दिलाई गई है. यहां अर्रे येहरे वालों से सईद यमडी वालो येहरे मुराद नहीं बल्के अल्लाह ﷻ के वोह नेक बन्दे मुराद हैं जिन के येहरे इबादते इलाही और तहजुद गुजारी के सभब मुनव्वर व ताबिन्दा (या'नी नूरानी) हों.”

كانت له العلامة الشامي والامام احمد رضاني الله تعالى عنهما -

(इस्लामी अफ्वाको आदाब हाशिया अज मौलाना मुहम्म अहमद आ'जमी मिरबाडी, स-इहा:249)

सद्रुशरीआ, बद्रुत्तरीका हजरते अल्लामा मौलाना मुहम्मद अमजद अली आ'जमी عليه رحمة الغوى इरमाते हैं : अब्दुल्लाह व अब्दुर्रहमान बहोत अर्रे नाम हैं मगर इस जमाने में येह अकसर देखा जाता है के अब्दुर्रहमान के बजाये उस शप्स को लोग रहमान केहते हैं और गैरे फुदा को रहमान केहना हराम है. इसी तरह कसरत से नामों में तस्गीर का रवाज है, या'नी नाम को इस तरह बिगाडते हैं जिस से हकारत निकलती है और जैसे नामों में तस्गीर हरगिज न की जाये लिहाजा जहां येह गुमान हो के नामों में तस्गीर की जायेगी येह नाम न रफे जायें दूसरे नाम रफे जायें.

(बहारे शरीअत, जिहद:15, स-इहा:154, मक्तअे र-जविय्या बाबुल मदीना कराची)

मुहम्मद नाम रफने के चार इजायल

सुवाल 16 “मुहम्मद” नाम रफने के इजायल इशाई हों.

जवाब: इस जिम्न में चार⁴ इरामीने सादिको अमीन صلى الله تعالى عليه وآله وسلم अर्ज करता हूं : (1) जिस के लडका पैदा हो और वोह मेरी महब्बत और मेरे नाम से ब-र-कत हासिल करने के लिये उस का नाम **मुहम्मद** रफे वोह (या'नी नाम रफने वाला वालिद) और उस का लडका दोनों बहिश्त (या'नी जन्नत) में जायें¹ (2) रोजे कियामत दो शप्स रब्बुल इज्जत के हुजूर जडे किये जायेंगे. हुकम होगा : उन्हें जन्नत में ले जाओ. अर्ज करेंगे : इलाही ! ﷻ हम किस अमल पर जन्नत के काबिल हुअे ? हम ने तो जन्नत का कोई काम किया नहीं ! इरमायेगा : जन्नत में जाओ, मैं ने हलफ किया है के जिस का नाम अहमद या मुहम्मद हो दोज्ज में न जायेगा² (3) तुम में किसी का क्या नुकसान है अगर उस के घर में अेक **मुहम्मद** या दो **मुहम्मद** या तीन **मुहम्मद** हों (4) जब लडके का नाम **मुहम्मद** रफो तो उस की इज्जत करो और मजिस में उस के लिये जगह कुशादा करो और उसे बुराई की तरफ निस्बत न करो.⁴

मुहम्मद नाम रखने की दो² नियतों

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! अगर बिगैर अच्छी नियत के इकत यूं ही मुहम्मद नाम रख लिया तो सवाब नहीं मिलेगा क्यूंके सवाब कमाने के लिये अच्छी नियत होना शर्त है और उदीसे पाक नम्बर (1) में दो² अच्छी नियतों की सराहत ली है के ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से **मुहब्बत** और आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के नामे नामी ईस्मे गिरामी से ब-र-कत हासिल करने की नियत से **मुहम्मद** नाम रखने वाले शुश किस्मत बाप और **मुहम्मद** नामी बेटे के लिये जन्नत की बिशारत है. आ'ला उजरत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ; इतावा 2-जविय्या जिल्द 24 स-इहा:691 पर इरमाते हैं : बेहतर येह है के सिई **मुहम्मद** या **अहमद** नाम रखे उन के साथ "जान" वगैरा और कोई लइज न मिलाये के इजाईल तन्हा ईन्हीं अस्माये मुबारका के वारिद हुये हैं. आजकल مُحَمَّدٌ नाम बिगाड ने की वजा आम है हालां के ऐसा करना गुनाह है और **मुहम्मद** नाम का बिगाडना तो बडोत ही सप्त तकलीफदेह है. लिहाजा **अकीका** में नाम **मुहम्मद** या **अहमद** रख लीजिये और पुकारने के लिये म-सलन **बिलाल रजा, डिवाल रजा, जमाल रजा, कमाल रजा, उबैद रजा, जुनैद रजा, उसैद रजा** और जैद रजा वगैरा रख लिया जाये. ईसी तरह बख्तियों के नाम ली सहाबिय्यात व वलिय्यात के नामों पर रखना मुनासिब है जैसा के **सकीना, जरीना, जमीला, इतिमा, जैनब, मैमूना, मरयम** वगैरा.

अकीके में कितने जानवर होने चाहियें ?

सुवाल 17 बख्या या बख्यी के **अकीके** में जानवरों की ता'दाद के बारे में ली ईशाद इरमा दीजिये.
जवाब: लउके के लिये दो और लउकी के लिये अेक हो. मेरे आका आ'ला उजरत, ईमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह ईमाम अहमद रजा पान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ इरमाते हैं: (दोनों के लिये) कम से कम (अेक जानवर) तो है ही और पिसर (या'नी बेटे) के लिये दो² (जानवर) अइजल हैं, (बेटे के लिये दो² की) ईस्तिताअत (या'नी ताकत) न हो तो अेक ली काई है.

(इतावा 2-जविय्या, जिल्द:20, स-इहा:586)

अकीके का जानवर कैसा हो ?

सुवाल 18 **अकीके** का जानवर कैसा होना चाहिये ?

जवाब: अेक कस्साब से अकीके के लिये जानवर खरीद ने के मुतअल्लिक पूछे गये अेक सुवाल के जवाब में मेरे आका आ'ला उजरत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ इरमाते हैं: ईन उमूर में अहकामे **अकीका** भिस्ले कुरबानी है, आ'जा सलामत हों, बकार बकरी अेक साल से कम की जईज नहीं, लेउ, मेंढा एे महीने का ली हो सकता है जब के ईतना ताजा इरबा हो के साल भर वालों में मिला दें तो दूर से **मुतमय्यज** न हो (या'नी देखने में साल भर का नजर आये)

(इतावा 2-जविय्या, जिल्द:20, स-इहा:584)

अकीके के जानवर के मुतअल्लिक उजरते अल्लामा शामी لَيْسَ بِرَأْسِ النَّاسِ इरमाते हैं : "बदायेअ" में है : अइजल कुरबानी येह है के मेंढा, यितकुब्रा, सींगों

વાલા ઓર ખસ્સી હો.

(રદ્દુલ મુહ્તાર, જિલ્દ:9, સ-ફહા:549, દારુલ મારેફા, બેરૂત)

જાનવર કી ઉમ્મ મેં શક હો તો ?

સુવાલ 19 અકીકા યા કુરબની કે જાનવર કી ઉમ્મ મેં શક હો તો ક્યા કરના ચાહિયે ?

જવાબ: ઉમ્મ કમ હોને કા શુબા હો તો ઉસ જાનવર કી કુરબાની યા અકીકા ન કરે. ઈસ ઝિમ્ન મેં ફતાવા ર-ઝવિયા જિલ્દ:20, સ-ફહા: 583, ઓર 584 સે દો જુઝઈયા મુલા-હઝા હોં : (1) સાલ ભર સે કમ કી બકરી અકીકે યા કુરબાની મેં નહીં હો સકતી, અગર મશકૂક હાલત હૈ તો વોહ ભી ઐસી હી હૈ કે સાલ ભર કી ન હોના મા'લૂમ હો, **عَدَمُ الْعِلْمِ بِتَحْقِيقِ الشَّرْطِ كَعِلْمِ الْعَدَمِ** (શર્ત કે પાએ જાને કા ઈલ્મ કા ન હોના ઐસે હી હૈ જૈસે ઈસ ચીઝ કે ન હોને કા ઈલ્મ હો) (2) જબ કે સાલ ભર કામિલ હોને મેં શક હૈ તો ઈસ કા અકીકા ન કરે, ઓર (જાનવર બેચને વાલે) કસ્સાબ કા કૌલ યહાં કાફી નહીં કે (જાનવર) બિકને મેં ઈસ (યા'ની બેચને વાલે) કા નફ્અ હૈ, ઓર (સાલ ભર કાચ્યા જો દાંત તોડતા હૈ વોહ ઉસ ને અભી ન તોડે યેહ) હાલતે ઝાહિરી ઈસ (બેચને વાલે) કી બાત (યા'ની જાનવર કામિલ હોને કે દા'વે) કો દફ્અ કર રહી હૈ. **وَاللَّاتِعَالِي عِلْم** (ખુલાસએ કલામ યેહ હૈ કે અગર જાનવર કી ઉમ્મ પર યેહ શક હો કે યેહ બકરા સાલ ભર કા નહીં મા'લૂમ હોતા યા ગાય શાયદ દો સાલ સે કમ ઉમ્મ કી હૈ તો ઐસી મશકૂક હાલત મેં ઉસ જાનવર કી કુરબાની યા અકીકા નહીં હો સકતા)

અકીકે કે ગોશત કી તક્સીમ કા મસ્અલા

સુવાલ 20 અકીકે કે ગોશત કી તક્સીમ કિસ તરહ કરેં ?

જવાબ: મેરે આકા આ'લા હઝરત, ઈમામે અહલે સુન્નત, મૌલાના શાહ ઈમામ અહમદ રઝા ખાન **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ** ફરમાતે હૈં : ગોશત ભી મિસ્લે કુરબાની તીન હિસ્સે કરના મુસ્તહબ હૈ, એક અપના, એક અકારિબ, એક મસાકીન કા. ઓર ચાહે તો સબ ખા લે ખ્વાહ સબ બાંટ દે, જૈસે કુરબાની.

(ફતાવા ર-ઝવિયા, જિલ્દ:20, સ-ફહા:584)

પકા કર ખિલાએ યા કચ્યા બાંટે ?

સુવાલ 21 અકીકે કા ગોશત પકા કર ખિલાના અફઝલ હૈ યા કચ્યા ગોશત તક્સીમ કર દે.

જવાબ: પકા કર ખિલાના કચ્યા તક્સીમ કરને સે અફઝલ હૈ.

(ઐઝન)

અકીકે કા ગોશત માં બાપ ખા સકતકે હૈં યા નહીં ?

સુવાલ 22 ક્યા અકીકે કે ગોશત મેં વાલિદૈન કા ભી હિસ્સા હૈ ?

જવાબ: યૂં તો કિસ કા ભી હિસ્સા ઝરૂરી નહીં, અલબત્તા મુસ્તહબ તક્સીમ કા બયાન હો યુકા. યેહ જો મશહૂર હૈ કે વાલિદૈન નહીં ખા સકતે યેહ ગલત બાત હૈ. માં બાપ, દાદા દાદી, ના નાની વગેરા સભી મુસલ્માન ખા સકતે હૈં.

કાફિરા દાઈ સે ઝચગી કરવાના હરામ હૈ

સુવાલ 23 કેહતે હૈં કે અકીકે કે ગોશત મેં સે નાઈ કો સર ઓર દાઈ (MID WIFE) કો રાન દેના ચાહિયે ઓર અગર દાઈ કાફિરા હો તો ક્યા કરે ?

જવાબ: મેરે આકા આ'લા હઝરત, ઈમામે અહલે સુન્નત, મૌલાના શાહ ઈમામ અહમદ રઝા ખાન **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ** ફતાવા ર-ઝવિયા જિલ્દ:20, સ-ફહા:589 પર ફરમાતે હૈં : સર નાઈ

કો દોને કા ન કહીં હુકમ ન મુમાનઅત, એક રવાજી (યા'ની રસ્મ વ રવાજ કી) બાત હૈ, (દેને મેં હ-રજ નહીં) જનાઈ (MID WIFE) કો રાન દેને કા હુકમ અલબ્તા હદીસ (સે સાબિત) હૈ, મગર કાફિરા સે યેહ (યા'ની ઝયગી કા) કામ લેના હરામ. કાફિરા સે મુસલમાન ઔરત કો એસે હી પદે કા હુકમ હૈ જૈસે મદે સે કે સિવા મુંહ કી ટિકલી ઔર હથેલિયોં ઔર તલ્વોં કે કુછ ન દિખાએ, ન કે ખાસ જનાઈ (યા'ની ઝયગી) કા કામ. “રદ્દુલ મુહ્તાર” મેં હૈ : “મુસલમાન ઔરત કો યહૂદી યા નસરાની યા મુશ્રિક ઔરત કે સામને નંગા હોના હલાલ નહીં સિવાએ ઇસ કે કે વોહ ઇસ કી લૌડી હો. (રદ્દુલ મુહ્તાર, જિલ્દ:9, સ-ફહા:613, દારુલ મારફેહા બૈરૂત) આ'લા હઝરત رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهَا مَجِيدَ فَرَمَاتے هُنَّ : ફિર અગર કિસી ને અપની હમાકત સે ઇસ (યા'ની કાફિરા સે રિલીવરી કરવાને કે) ગુનાહ કા ઇતિકાબ કિયા, اَوْ كَانَ صَاحِبَ الْاِخْطَارِ اِلَيْهِ (યા'ની : યા ઉસ કી સહીહ શદીદ મજબૂરી હો) તો ઇસ (કાફિરા કો રાન વગૈરા કુછ ન દેં કે કાફિરોં કા સ-દકાત વગૈરા મેં કુછ હક નહીં . ન ઉસ કો દેને કી (શરઅન) ઇજાઝત. (ફતાવાર-ઝવિયા, જિલ્દ:20, સ-ફહા:588, 589) સ-ફહા 588 પર ઇસ કે અગલે ફતવે મેં ઇશાદિ ફરમાતે હૈં : ભંગન યા કિસી કાફિરા કો જનાઈ (MID WIFE) બનાના સખ્ત હરામ હૈ. ન કાફિરા કો રાન દી જાએ, ઔર બાલોં કી ચાંદી મિસ્કીન કા હક હૈ, નાઈ મિસ્કીન હો દેને મેં મુઝાયકા નહીં , અસ્લ હુકમ યેહ હૈ. ફિર જિસ ને ઇસ કે ખિલાફ કિયા ભંગન કો રાન, ગની નાઈ કો ચાંદી દી તો બુરા કિયા, મગર અકીકા હો ગયા, સિરી કે બારે મેં કોઈ ખાસ હુકમ નહીં જિસે ચાહે દે, જિસ કા અકીકા ન હુઆ હો વોહ જવાની બુઢાપે મેં ભી અપના અકીકા કર સકતા હૈ. وَاللّٰهُ تَعَالٰى اَعْلَمُ

અકીકે કી ખાલ કા ઇસ્તે'માલ

સુવાલ 24 અકીકે કે જાનવર કી ખાલ કા ક્યા હુકમ હૈ ?

જવાબ: ઇસ કે ગોશત ઔર ખાલ કા ભી વોહી હુકમ હૈ જો કુરબાની કે જાનવર કે ગોશત પોસ્ત (ખાલ) કા. કે ખાલ કો બાકી રખતે હુએ યા એસી ચીઝ સે બદલ કર જિસે બાકી રખ કર નફ્અ ઉઠાયા જા સકતા હો અપને સર્ફ મેં લાએ યા મિસ્કીન કો દે યા કિસી ઔર નેક કામ મ-સલન મસ્જિદ યા મદ્રસે મેં સર્ફ કરે. (બહારે શરીઅત, હિસ્સા:15, સ-ફહા:155)

ખાલ ઉજરત મેં દેના કેસા ?

સુવાલ 25 ક્યા કસાઈ કો અકીકે કે જાનવર કી ખાલ બતૌરે ઉજરત દે સકતે હૈં ?

જવાબ: નહીં દે સકતે. ઇસી તરહ નાઈ કો સર યા જનાઈ (MID WIFE) કો રાન બતૌરે ઉજર દેને કી શરીઅત મેં ઇજાઝત નહીં. (બહારે શરીઅત, હિસ્સા:145, સ-ફહા:155)

કૌન ઝબ્હ કરે ?

સુવાલ 26 અકીકે કા જાનવર કૌન ઝબ્હ કરે ?

જવાબ: મેરે આકા આ'લા હઝરત, ઇમામે અહલે સુન્નત, મૌલાના શાહ અહમદ રઝા ખાન رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهَا فَرَمَاتے هُنَّ : બાપ અગર હાઝિર હો ઔર ઝબ્હ પર કાદિર હો તો ઉસી કા ઝબ્હ કરના બેહતર હૈ કે યેહ શુક્રે ને'મત હૈ. જિસ પર ન'મત હુઈ વૌં અપને હાથ સે શુક્ર અદા કરે. વોહ ન હો યા ઝબ્હ ન કર સકે તો દૂસરે કો ઇજાઝત દે દે. (ફતાવાર-ઝવિયા, જિલ્દ:20, સ-ફહા:585, મલખમસન)

અકીકે કી દુઆ

સુવાલ 27 અકીકે કી દુઆ કૌન પઢે ? ઝાબેહ યા વાલિદ ?

જવાબ: ઝાબેહ યા'ની જો ઝબ્હ કરે વોહી દુઆ પઢે. અકીકાએ પિસર (લડકે કે અકીકે) મેં કે બાપ

ઝબ્હ કરે (તો ઝબ્હ સે કબ્લ) દુઆ યૂં પઢે :

اللَّهُمَّ هَذِهِ عَقِيْقَةُ ابْنِي قَلَانِ
ذِمَّتْهَا يَدِيهِمْ وَلَحْمُهَا يَلْحَمِيهِ
وَعَظْمُهَا يَعْظِمُهُ وَجِلْدُهَا
يَجْلِدُهُ وَخَشْرُهَا يَخْشَرُهُ
اللَّهُمَّ اجْعَلْهَا فِدَاءً لِيَابْنِي مِنَ
النَّارِ بِسْمِ اللَّهِ اللَّهُ أَكْبَرُ

ઐ અલ્લાહ (عَزَّوَجَلَّ) ! યેહ મેરે ફુલાં બેટે કા અકીકા હૈ, ઈસ કા ખૂન ઉસ
કે ખૂન, ઈસ કા ગોશ્ત ઉસ કે ગોશ્ત, ઈસ કી હડ્ડી ઉસ કી હડ્ડી, ઈસ કા
ચમડા ઉસ કે ચમડે ઓર ઈસ કે બાલ ઉસ કે બાલ કે બદલે મેં હૈં. ઐ
અલ્લાહ (عَزَّوَجَلَّ) ! ઈસ કો મેરે બેટે કે લિયે જહન્નમ કી આગ સે ફિદયા
બના દે. અલ્લાહ તઆલા કે નામ સે, અલ્લાહ સબ સે બેડા હૈ.

(દુઆ ખત્મ કર કે ફૌરન ઝબ્હ કર દે)

ફુલાં કી જગહ પિસર (યા'ની બેટે) કા જો નામ હો, લે, દુખ્તર (યા'ની બેટી) તો દોનોં
જગહ اِبْنِي કી જગહ بِنْتِي ઓર પાંચોં જગહ ه کی જગહ هَا કહે ઓર દૂસરા
શખ્સ ઝબ્હ કરે તો દોનોં જગહ ઈબ્ની ફુલાં યા બિન્તી ફુલાં કી જગહ ફુલા ઈબ્ને ફુલાં યા
ફુલાના બિન્તી ફુલાના કહે. બચ્ચે કો ઉસ કે બાપ (ઓર બચ્ચી કી માં) કી તરફ નિસ્બત
કરે. (ફતાવા ૨-ઝવિયા, જિલ્દ:20, સ-ફહા:585,586) મ-સલન મુહમ્મદ રઝા બિન મુહમ્મદ અલી
યા ઝૈનબ બિન્તે મરયમ.

કયા દુઆ પઢના ઝરૂરી હે ?

સુવાલ 28 કયા દુઆ પઢે બિગૈર અકીકા નહીં હોગા ?

જવાબ: બિગૈર દુઆ પઢે ઝબ્હ કરને સે ભી અકીકા હો જાએગા.

(બહારે શરીઅત, હિસ્સા:15, સ-ફહા:155)

અકીકે કે ગોશ્ત કી હડ્ડિયાં તોડના કેસા ?

સુવાલ 29 કયા યેહ દુરુસ્ત હૈ કે અકીકે કે જાનવર કી હડ્ડિયાં ન તોડી જાએં !

જવાબ: બેહતર યેહ હૈ કે ઈસ કી હડ્ડી ન તોડી જાએ બલ્કે હડ્ડિયોં પર સે ગોશ્ત ઉતાર લિયા
જાએ યેહ બચ્ચે કી સલામતી કી નેક ફાલ હૈ ઓર હડ્ડી તોડ કર ગોશ્ત બનાયા જાએ ઉસ
મેં ભી હ-રજ નહીં. (બહારે શરીઅત, હિસ્સા:15, સ-ફહા:155, મક્તબએ ૨-ઝવિયા, બાબુલ મદીના કરાચી)

મીઠા ગોશ્ત

સુવાલ 30 કયા અકીકે કા ગોશ્ત પકાને કા ભી કોઈ મખ્સૂસ તરીકા હૈ ?

જવાબ: સદ્દુરુશરીઆ, બદ્દુરુત્તરીકા હઝરતે અલ્લામા મૌલાના મુફ્તી મુહમ્મદ અમજદ અલી
આ'ઝમી عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْتَوَى ફરમાતે હૈં : ગોશ્ત કો જિસ તરહ યાહૈં પકા સકતે હૈં મીઠા
પકાયા જાએ તો બચ્ચે કે અખ્લાક અચ્છે હોને કી ફાલ હૈ. (બહારે શરીઅત, હિસ્સા:15,

સ-ફહા:155, મક્તબએ ૨-ઝવિયા, બાબુલ મદીના કરાચી)